1

सलाम

(फिलेमोन 13)

प्राचीन पत्रों में हो या आधुनिक ईमेलों में, अभिवादन या सलाम आम तौर पर ठहराए हुए फार्मूले होते हैं जिनसे लेखक सावधानी से संदेश का आरम्भ करता है। जिस कारण कई बार उन्हें जल्दी में पड़ा जाता है या पूरी तरह से छोड़ दिया जाता है जिससे पाठक उत्सुक्ता वश पत्र के विषय पर आ जाता है। बेपरवाही से पढ़ना फिलेमान के पत्र के आरम्भ के लिए नहीं होना चाहिए। वास्तव में पत्र की सामाजिक गतिशिलता और भावनात्मक तीर्वता आरम्भिक आयतों में दिखाई गई है।

1-3

[1]पौलुस की ओर से जो मसीह यीशु का कैदी है,
और भाई तिमुथियुस की ओर से हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन। [2]और बहिन अफफिया, और हमारे साथी योद्धा अरखिप्पुस, और फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम। [3]हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे।

आयत 1. पौलुस यूनानी और हिन्दी दोनों बाइबलों में पहला शब्द मिलता है। पहले "तरसुस के शाऊल" के रूप में प्रसिद्ध (देखें प्रेरितों 13:9; 21:39), "अन्यजातियों का यह प्रेरित" मसीही मिशनरी था जिसने नये नियम में पाए जाने वाले कम से कम तेरह पत्र लिखे। कई अवसरों पर उसने अपने पत्रों को लिखवाया (रोमियों 16:22)। जबकि अन्य अवसरों पर उसने पत्र की प्रमाणिकता का संकेत देने के लिए अन्तिम टिप्पणी लिखी (कुलुस्सियों 4:18; 2 थिस्सलुनीकियों 3:17)। फिलेमोन को उसने पूरा पत्र या केवल आयत 19 वाला वचनपत्र अपने हाथ से लिखा हो सकता है।

पौलुस ने अपना परिचय **कैदी** के रूप में करवाया जो आयत 9 में दोहराया गया है। पहले उसने अपने कुरिन्थी आलोचकों को लिखा था कि उसने उन से "अधिक कैद" देखी थी (2 कुरिन्थियों 11:23)। पौलुस के लिए कैदी होना बाद बार मिलने वाला अनुभव था और उसके जीवन के अन्तिम चार वर्ष जिनका वर्णन प्रेरितों 23—28 में मिलता है पूरी तरह से कैदी के रूप में दिखाइए गए। रोमी नागरिक के रूप में पौलुस को जेल में गैर नागरिकों से होने वाले बर्ताव से बेहतर बर्ताव का हक्कदार था (प्रेरितों 16:35-39; 22:25-29)।

पौलुस को चाहे रोमी सरकार द्वारा कैद में डाला गया था परन्तु अपने मन में वह वास्तव में **मसीह यीशु का** कैदी था। वह अपने आपको "मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया" मानता

था (गलातियों 2:20) और उसका मानना था कि वह और तीमुथियुस ''मसीह यीशु के दास'' बन गए हैं (फिलिपियों 1:1)। अगबुग नबी द्वारा चेतावनी दिए जाने पर कि यरूशलेम के यहूदी उसे बांधकर उसे अन्यजातियों के हाथों सौंप देंगे, पौलुस ने अपने समर्थकों से कहा था कि ''तुम क्या करते हो, कि रो रोकर मेरा मन तोड़ते हो, मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के लिए बरन मरने के लिए भी तैयार हूं'' (प्रेरितों 21:13)।

''मसीह यीशु'' अपने प्रभु के लिए कहने का पौलुस का एक पसंदीदा ढंग था। ''यीशु'' जिसका अर्थ ''यहोवा उद्धार करता है'' (मत्ती 1:21), परमेश्वर के पुत्र को उसके जन्म पर दिया गया नाम था। ''मसीह'' (यूनानी में ''ख्रिस्तुस'') का अर्थ है ''अभिषिक्त'' और वह भविष्यवाणी की हुई भूमिका थी जिसे यीशु ने पूरा किया (मत्ती 16:16)। ''मसीह'' और ''यीशु'' नाम चाहे दो हैं, पर आज उन्हें इकट्ठे या एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जाता है। ''यीशु'' उसका नाम है और ''मसीह'' उसका पद है। पौलुस ने कई बार उसे ''मसीह,'' ''यीशु,'' ''मसीह यीशु,'' और ''यीशु मसीह'' कहा।

सलाम में किलने वाले शब्द बेशक महत्वपूर्ण है परन्तु इससे भी महत्वपूर्ण वह शब्द है जो इसमें नहीं मिलता, और वह शब्द है ''प्रेरित।'' कई अवसरों में पौलुस ने अपने पत्रों का आरम्भ अपना परिचय, ''प्रेरित पौलुस'' कहते हुए दिया।[1] इस अवसर पर उसने ऐसा नहीं किया। पहली नज़र में यह अजीब लग सकता है परन्तु शीघ्र ही पाठक इस बात की सराहना करता है कि पौलुस ने अपने आपको ''प्रेरित'' न कहकर ''कैदी'' क्यों कहा। उसके पास प्रोत्साहित करने के लिए बढ़िया मिलाप था और बहुत सावधान होने के कारण उसने ऐसा कुछ नहीं कहा जिसे अधिकारात्मक, दक्ष या कब्जा करे वाला हो सके (आयत 14)। ''मसीह यीशु का प्रेरित पौलुस'' नहीं बल्कि ''मसीह यीशु का कैदी पौलुस'' ऐसे कार्य को आरम्भ करने का कहीं अधिक ढंग था। उसने तय कर लिया था कि जब फिलेमोन सही काम करेगा तो यह ''दबाव से नहीं पर [उसके] आनन्द से हो'' (आयत 14)।

इस पत्र का सहप्रेषक **भाई तीमुथियुस** था। पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के आरम्भ से ही (प्रेरितों 16:1) तीमुथियुस उसका भरोसेमंद साथी और प्रशिक्षार्थी था। जेल की पत्रियों में से एक और ने पौलुस ने तीमुथियुस में अपने भरोसे के विषय में यूं लिखा:

> मुझे प्रभु यीशु में आशा है, कि में तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त भेजूंगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर तुझे शान्ति मिले। क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे। क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की। पर उसको तो तुम ने परखा और जान भी लिया है, कि जैसा पुत्र पिता के साथ करता है, वैसा ही उस ने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया ... (फिलिप्पियों 2:19-23)।

इस सलाम में चाहे पौलुस के साथ तीमुथियुस का नाम था परन्तु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो जाता है कि पत्र का लेखक पौलुस है न कि तीमुथियुस आयत 4 से पौलुस ने प्रथमपुरुष बहुवचन (''हम'' और ''हमें'') के बजाय प्रथम पुरुष एकवचन (''मैं'' और ''मुझे'') में लिखा। ''मुझ बूढ़े पौलुस को जो अब मसीह यीशु के लिए कैदी हूं'' (आयत 9) पत्र का मुख्य लेखक था।

पत्र का पहला सम्बोधन **हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन** के नाम था। वह कुलुस्से की कलीसिया का सदस्य होगा क्योंकि उसके दास उनेसिमुस का नाम कुलुस्सियों के नाम पत्र में ''तुम ही में से'' बताया गया है (4:9)। इसके अलावा फिलेमोन के बारे में नया नियम जो कुछ भी कहता है वह उस पत्र में है जो उसके नाम से है। वह दास का स्वाम मसीही था जो अपने घर में कुलुस्से की कलीसिया को स्थान देता था। किसी समय वह पौलुस के प्रचार के प्रभाव में आ गया था। चाहे सीधे तौर पर इफिसुस में हो या प्रोक्ष रूप में इपफ्रास के द्वारा, और वह मसीही बन गया था (देखें आयत 19)। पौलुस ने उसे बड़ी कोमलता से (''हमारा प्रिय भाई'') और आदर से (''सहकर्मी'') सम्बोधित किया।

आयत 2. बहन अफफिया वह दूसरा व्यक्ति थी जिसे सम्बोधित किया गया। उसके बारे में पक्के तौर पर इतना ही पता चल सकता है कि वह कुलुस्से की एक मसीही स्त्री थी। यह पक्का पता नहीं है कि वह फिलेमोन की पत्नी थी या उसकी बहन। उसके नाम के इस उल्लेख के सम्बन्ध में, मौप्सुएशिया के थियोडोर (ईस्वी 350–428) का अवलोकन है, ''पौलुस फिलेमोन और अफफिया को समान रूप में सलाम कहने की बात करता है। वह इस प्रकार से यह संकेत देना चाहता है कि पुरुषों और स्त्रियों के विश्वास या विश्वास की सामर्थ में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं है।''[2]

सम्बोधन में तीसरा और अन्तिम व्यक्ति जिसका नाम है वह **हमारे साथ योद्धा अर्खिप्पुस** का नाम है। कुलुस्से की कलीसिया का एक और सदस्य यह व्यक्ति फिलेमोन और अफफिया का सम्बन्धी हो सकता है। पौलुस मसीही व्यक्ति के जीवन और सेवकाई के विवरण में सैनिक रूपक का इस्तेमाल करने में कोई हिचक नहीं (इफिसियों 6:10–17)। ''साथी योद्धा'' कहना यह संकेत देने का ढंग था कि किसी ने बहादुरी से, बलिदानपूर्वक और वफ़दारी से सेवा की है।

तीसरा सम्बोधन एक समूह के नाम था और वह समूह **घर की कलीसिया** थी। पौलुस ने जो पौलुस और फिलेमोन के बीच निजी मामला लगता हो सकता है उस में अफफिया और अर्खिप्पुस को नहीं लाया बल्कि उसने ''निजी'' पत्र में पूरी मण्डली को सम्बोधित किया।

आयत 3. हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह और शान्ति तुम्हें मिलती रहे। पौलुस का अपने पत्र में सलाम कहने का विशेष ढंग था। ''अनुग्रह'' परमेश्वर का मुख्त वरदान है (इफिसियों 2:8)। जो उद्धार दिलाता है, और ''शांति'' मसीह के द्वारा परमेश्वरा के साथ मसीही लोगों के नये सम्बन्ध को कहा गया है (रोमियों 5:1)।

यीशु मसीह के रूप में पद पर यहां पर ''प्रभु'' विशेषज्ञ दिलचसपी वाली बात है। कुलुस्सियों के नाम बहुत नज़दीकी से जुड़े पत्र[3] में पौलुस ने सेवक और दास के सम्बन्ध की बात की। उस अवसर पर उसने ''प्रभु'' के लिए यूनानी संज्ञा (kuvrioß, *kurios*) का इस्तेमाल किया जिसमें दोनों का अर्थ ''दास का स्वामी'' और ''प्रभु मसीह'' है:

> हे सेवको, जो *शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी* हैं, सब बातों में उन की आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करने वालों की नाईं दिखाने के लिए नहीं, परन्तु मन की सीधाई और *परमेश्वर के भय से।* और जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझ कर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु *प्रभु के लिए* करते हो। क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें

इस के बदले प्रभु से मीरास मिलेगी: तुम *प्रभु मसीह* की सेवा करते हो। ...
हे स्वामियो, अपने अपने दासों के साथ न्याय और ठीक-ठीक व्यवहार करो, यह समझकर कि स्वर्ग तें तुम्हारा भी एक स्वामी है (कुलुस्सियों 3:22—4:1)।

उसके दास की ओर से दास के स्वामी से अपील करने का आरम्भ करने की तैयार करते हुए पौलुस के लिए उपयुक्त और शायद आवश्यक था कि वह यह याद दिलाते हुए आरम्भ करे कि दास और स्वामी दोनों ही ''प्रभु यीशु मसीह'' के अधिकार में है।

प्रांसगिकता

''दो पत्र इस सप्ताह आए''

नये नियम के कई पत्र कलीसिया की आराधना सभा में पहले पढ़े गए थे (कुलुस्सियों 4:16)। इस बात को ध्यान में रखते हुए कुलुस्से की कलीसिया में उस रविवार की कल्पना करें जब तुखिकुस और उनेसिमुस पौलुस के दो पत्र लेकर पहुंचे थे। पहला पत्र तो पूरी कलीसिया के नाम सामान्य था जबकि दूसरा पत्र उस मसीही फिलेमोन के नाम सीधे था जिसके घर में कलीसिया लगातार इकट्ठा होती थी।

आराधना के लिए कलीसिया के लिए इकट्ठा होने पर उस शाम दास और उनके स्वामी सब वहां इकट्ठा थे। उनेसिमुस नामक जिसकी लम्बे समय से अनुपस्थिति ने छोटी सी कलीसिया में बातचीत का विषय बना दिया होगा, आश्चर्यजनक वापसी के कारण लोगों के फिलेमोन के घर में पहुंचना आरम्भ होते ही तनाव का माहौल बन गया। सब लोगों के आ जाने पर फिलेमोन खड़ा हुआ और हाथ का इशारा करते हुए उसने मण्डली को चुप करवाया। उसने इकट्ठा हुए लोगों को बताया कि तुखिकुस अभी अभी प्रिय प्रेरित पौलुस की खबर लेकर आया है और उसने सभा का कार्यक्रम उसे सौप दिया।

तुखिकुस पौलुस का हाल बताते हुए रिपोर्ट देने लगा; उसका स्वास्थ्य अच्छा था, वह आत्मा में मज़बूत था और उसके रहने की परिस्थितियां रहने के योग्य थीं। फिर संक्षेप परिचय देने के बाद उसने दोनों में से पहला पत्र निकाला जो पौलुस के लिए लेकर आया था। वह पढ़ने लगा। प्रेरित पौलुस द्वारा उसे दिए गए सम्मान से बेशक पूरी कलीसिया मुस्कराई होगी। दस से भी कम वर्ष पहले कुलुस्से में भी मसीही नहीं था। परन्तु वह बड़े नगर में पौलुस के तीन वर्ष तक प्रचार करने और सिखाने से पहले की बात की, लूका नामक तराई में अपने घर नगर जाने से कुछ दिन पहले तक। इफिसुस न लोगों के कारोबार के आने जाने के कारण पूरे सुसमाचार के आस पास के ग्रामिण ईलाकों में भी फैल गया था। लौदीकिया के निकट एक कलीसिया बन गई थी और फिर इपफ्रास नाम एक व्यक्ति एक दिन कुलुस्से में प्रभु यीशु मसीह के बारे में आकर बताने लगा। बहुत पहले कुलुस्से में कई मसीही थे, और वे प्रत्येक प्रभु के दिन फिलेमोन के घर में इकट्ठा होने लगे थे। कुलुस्से की कलीसिया के कई सदस्य पौलुस से इफिसुस में मिले थे परन्तु वह पौलुस अभी तक उनके नगर में नहीं जा पाया था। तौभी इन मसीही लोगों को लगा कि वह उन्हें अच्छी तरह से जानता हौ और अपने पत्र में उन्हें उसके सलाम भेजने पर वे सभी मुस्कराए होंगे।

अगले तीस मिनट तक मण्डली पौलुस के पत्र में से तुखिकुस की एक एक बात को बड़े

ध्यान से सुन रही थी। उसने उन्हें मसीह महानता और यह कि संसार की कोई किसी भी बात को उससे मिलाया नहीं जा सकता उन्हें याद दिलाया। उसके आगे पढ़ते हुए लोगों के हाल की हर प्रकार की आत्मिक उलझन जैसे छूमन्तर हो गई। यीशु का सम्पूर्ण दर्शन उन्हें मिल गया था। परन्तु शीघ्र ही उसने अपने से बढ़कर प्रभु के साथ संगति की नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया, जैसा एक प्रचार का कहना था, ''प्रचार करना बंद करके हस्तक्षेप करना बन्द कर दिया!''

स्थिति बड़ी नाजुक हो गई जब पौलुस ने पतियों, पत्नियों, माता-पिता और फिर बच्चों को सम्बोधित किया। परन्तु बेचैन करने वाला पल तब आया जब पढ़ने वाले ने दासों और उनके स्वामियों के लिए पौलुस के शब्द कहे। कुलुस्से की कलीसिया के लिए यह केवल सामाजिक बुराइयों पर चर्चा का सार नहीं था। बल्कि यही उनका जीवन था। स्वामी और दास सब कमरे में बैठे हुए थे। उन्हें उनकी जाति, उनके कपड़ों, या उनकी दुनियादारी से पहचाना नहीं जा सकता था, फिर भी हर किसी को यह मालूम था कि कौन दास है और कौन स्वामी है। यह बात किसी भी रविवार ही होती होगी परन्तु इस रविवार जारूपता आम से अधिक थी। उनेसिमुस लम्बी और अक्षमय अनुपस्थिति से लौटा था और हर कोई यह देखने को बेताब था कि फिलेमोन उसके साथ केसे पेश आता है।

दासता यानी गुलामी पर पौलुस की बातें सामाजिक संस्थान पर या रोमी सरकार के ढंग के अनुसार नहीं। उसके बजाय वे व्यावहारिक बातें ही से हर मसीही का सम्बन्ध मसीह के साथ इस प्रकार से दूसरों के उसके सम्बन्ध से बदल जाता है। पूरी कलीसिया के पौलुस के पत्र के साथ-साथ यानी गुलामी के नाजुक विषय को खोलने पर पूरी कलीसिया के एक टक देखने और दिल की धड़कने बढ़ जाने की कल्पना करें। प्रभु की सेवा, प्रतिफल, सेवा और परिणामों पर सच्चाई की बात की समयता से कठिन भाग खत्म हो गया। हर किसी ने चैन की सांच ली जब तुखिकुस ने प्रार्थना की बात पढ़कर पौलुस के व्यक्तिग अभिवादनों के साथ समाप्त किया।

''बदतरीन'' बेशक अभी आने वाला हो सकता है। ''अनुग्रह तुम्हें मिलता रहे'' के समाप्त करने के थोड़ी देर बाद तुखिकुस ने चर्म का एक और टुकड़ा उठाया होगा ओर पढ़ने लगा था। सुनने वालों को समझ आ गया था कि पौलुस ने कुलुस्से की कलीसिया की समस्याओं पर बात खत्म नहीं की है। उस व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए जिसके घर में वे इकट्ठा हुए, उसने लिखा, ''फिलेमोन।'' फिर उसने फिलेमोन के घर के दो और लोगों अम्फफिया और अर्खिप्पुस का नाम लिया। कलीसिया के लोगों को लगने लगा कि वे किसी के निजी पत्र को पढ़ रहे हैं या किसी की निजी बातचीत को सुन रहे हैं।

सम्बोधन में अन्तिम नाम किसी व्यक्ति का नहीं बल्कि ''घर की कलीसिया'' का था। इसमें जवान और बूढ़ों, दास औश्र स्वतन्त्र, धनवान और निर्धन, नर और नारी सब को शामिल किया गया था। सामने आई समस्या का सामना करने के लिए मिलकर इकट्ठे होने का न्यौता सब को दिया गया था। जिस का उस कलीसिया को परिवार जैसा माहौल लगा जो पहले कभी नहीं लगा था। तुखिकुस के दूसरा पत्र पढ़ने तक भाई और बहने होने और मसीह की सहिभागिता में साझी होने की बात वास्तविकता बन गई। दास के स्वामी को उसके भगौड़े दास की बात बताई जा रही थी, और पूरी कलीसिया को इस मामलें मसहायता करने को कहा गया था। हर मसीही में जिसने उस दिन फिलेमौन के नाम पत्र को सुना था महसूस किया कि मसीही विश्वास चाहे यह बहुत

ही निजी है पर यह निजी मामला नहीं है। कलीसिया वास्तव में एक परिवार थी और इस कारण कलीसिया के लोगों का कर्त्तव्य था कि वे अपने विश्वास की चुनौतियों का मिलकर सामना करें।

यह केवल आपका ही नहीं है

यह समझाने के एक रूप के ढंग में कि फिलेमोन और उनेसिमुस का व्यक्तिगत तनाव समकालीन कलीसिया में हो सकता है, टैली, हार्वस और विलियम एच. विलीमोन ने एक ज़बर्दस्त कहानी बताई है। सॉग नामक एक परेशान पति जिसका विवाह सयू नामक एक शराबी से हुआ था, ने एक दिन अपने प्रचारक को यह बताने के लिए बुलाया कि उसकी पत्नी ने फिर से पी रखी है उस व्यक्ति ने पिछले सालों में कई बार उसे छोड़ा था परन्तु इस बार उसने फिर से कोशिश करने की सामर्थ या इच्छा नहीं थी। उसकी आशा और धीरज जवाब दे गए थे।

सब दम्पत्तियों की बाइबल क्लास की एक समस्या पर एलन ने अगले दिन प्रचार को क्यू सयू के शराबी होने, टॉम की निराशा और उस दम्पत्ति की टूट रही शादी की चर्चा करने के लिए बुलाया। परेशान करने वाली बातचीत के कुछ मिनटों बाद एल ने बताया कि इस स्थिति की बात उसे हलाल कर रही है। यह पूछने पर कि वह बात क्या हो सकती है एलन ने उत्तर दिया, ''मुझे यह बात परेशान करती है कि उससे इसे अकेले ही सहने की उम्मीद की जाती है।'' आगे वह सुझाव देने लगी कि बाइबल क्लास ने उस दम्पत्ति को सहायता करने पर दोष देना चाहिए: ''हम टॉम पर कोई परेशानी न आने दे। इसके अलावा हस्पताल में शराबियों के लिए अभी अभी एक नया कार्यकर्म आरम्भ किया है। मेरा कहना है कि हम हम आधा खर्च उठाएं।...''[14] यह अवलोकन करने के लिए हार्बट और विलिमोन सही थे, ''सुसमाचार हम से किसी चीज़ की मांग नहीं करता–करुणा और वचन निभाना, बच्चे जनना, चंगाई लेना–इसकी उम्मीद हम से अविवाहितों के रूप में की जाती है। हम परिवार के रूप में रहते, एक कालॉनी के रूप में जिसने टॉम जैसे साधारण लोगों को सही बनाए।''[15]

आज कलीसिया के लिए सबसे बढ़े सांस्कृति खतरों में एक निजवाद है। ''तुम अपना काम करो'' आम तौर पर मसीही लोगों के मुंह सुनने को मिलता है जब कलीसिया के परिवार में से कोई उन पर आई किसी परेशान के बारे में पूछता है या उनके संदेहास्पद व्यवहार को चुनौती देता है। ''मैं किसी को परेशान नहीं करता हूं'' और ''यह *मेरा* जीवन है।'' ऐसी सोच वालों के दो उत्तर होते हैं। ये बातें हमारे समाज में आम तौर पर स्वीकार की जाती है इस कारण मसीही लोग कई बर यह भूल जाते हैं कि वे मसीही विश्वास के उलट चल रहे हैं।

कलीसिया कोई सम्प्रदाय नहीं है जो नियन्त्रण अपने हाथ में रखता हो बल्कि एक परिवार है जो प्रोत्साहित करना, कई बार सामना करता और हमेशा प्रेम करता है। जब कोई मसीही व्यक्ति पाप में गिर जाता या निराशा में फिसल जाता है तो मसीह में उसकी परवाह करने वाले भाइयों और बहनों का व्यवहार उसे समस्या से निपटने में हर हाल में सहायता के लिए हो। फिलेमोन के नाम पत्र आज मसीही लोगों को स्मरण दिलाता है कि ...

आपका विवाह केवल आपका नहीं है!
आपकी समस्सयाएं केवल आपकी नहीं है!

आपका दुर्व्यवहार केवल आपका नहीं है!
आपके घर की समस्याएं केवल आपकी नहीं हैं!
आपकी परीक्षाएं केवल आपकी नहीं है!
आपका लोभ केवल आपकी नहीं है!
आपका गर्भवति होना केवल आपका नहीं है!
काम में आपका व्यवहार केवल आपका नहीं है!
आपका झूठ बोलना केवल आपका नहीं है!
आपका परेशान होना केवल आपका नहीं है!
आपकी मृत्यु केवल आपकी नहीं है!

टिप्पणियां

[1]देखें रोमियों 1:1; 1 कुरिन्थियों 1:1; 2 कुरिन्थियों 1:1; गलातियों 1:1; 1 तीमुथियुस 1:1; 2 तीमुथियुस 1:1; तीतुस 1:1. [2]थियोडोर पीटर गोर्डे एंड थॉमस सी. ओडेन, सम्पा. *कोलोसियंस, 1–2, थिसलोनियंस, 1–2 तीमोथी, टाइटस, फिलेमोन,* एंसियंट क्रिश्चियन कमैंट्री ऑन स्क्रिप्चर (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 2000), 311. [3]कुलुस्सियों सम्भवतया उसी रविवार उसी कलीसिया में फिलेमोन के नाम पत्र के साथ-साथ पढ़ी गई। [4]स्टैनली हाउरवस एण्ड विलियम एच. विलिमोन, *रेज़िडेंट एलियन: लाइफ इन द क्रिश्चियन कॉलोनी* (नैशविल्ल: अबिंग्डन प्रैस, 1989), 135 से लिया गया। [5]वही, 136.